डाक पंजीयन संख्या - श्रीगंगानगर/105/2009-2011
आर. एन. आई - राजहिन/2003/9899
प्रकाशन दिनांक 1 सितम्बर 2011 : मूल्य - पाँच रुपये

अजायब ✿ बानी

वर्ष - नौंवा | अंक-पाँचवा | सितम्बर-2011 | मासिक पत्रिका

5
शुभ दिहाड़ा
परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज के जन्मदिन की लख-लख बधाइयाँ

9
अमृत
(गुरु नानकदेव जी की बानी)
सतसंग-परम सन्त अजायब सिंह जी
(16 पी.एस. आश्रम राजस्थान)

27
सतगुरु ही बखशिंद
(वारां - भाई गुरदास जी)
सतसंग-परम सन्त अजायब सिंह जी
(16 पी.एस. आश्रम राजस्थान)

38
मन की सूक्ष्म चालाकियां
परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज द्वारा प्रेमियों के सवालों के जवाब
(16 पी.एस. आश्रम राजस्थान)

50
धन्य अजायब
16 पी.एस.आश्रम में सतसंग के कार्यक्रमों की जानकारी

स्वत्वाधिकारी, प्रकाशक, मुद्रक व सम्पादक : **प्रेम प्रकाश छाबड़ा ने प्रिन्ट टुडे श्री गंगानगर से छपवाकर 1027 अग्रसेन नगर, श्री गंगानगर -335 001 (राजस्थान) से प्रकाशित किया। फोन - 9950 556671 (राजस्थान) 9871 50 1999 (दिल्ली)**
विशेष सलाहकार : **गुरमेल सिंह नौरिया** फोन - **9928 925304** उप सम्पादिका : **नंदिनी**
अनुवादक : **मास्टर प्रताप सिंह** सहयोग : **सुमन आनन्द,** मुख्य प्रष्ठ सज्जा : **प्रथम सरधारा**
सन्त बानी आश्रम
16 पी.एस. रायसिंहनगर - 335 039 जिला - श्री गंगानगर (राजस्थान)
e-mail : dhanajaibs@yahoo.co.in 114 Website : www.ajaibbani.org

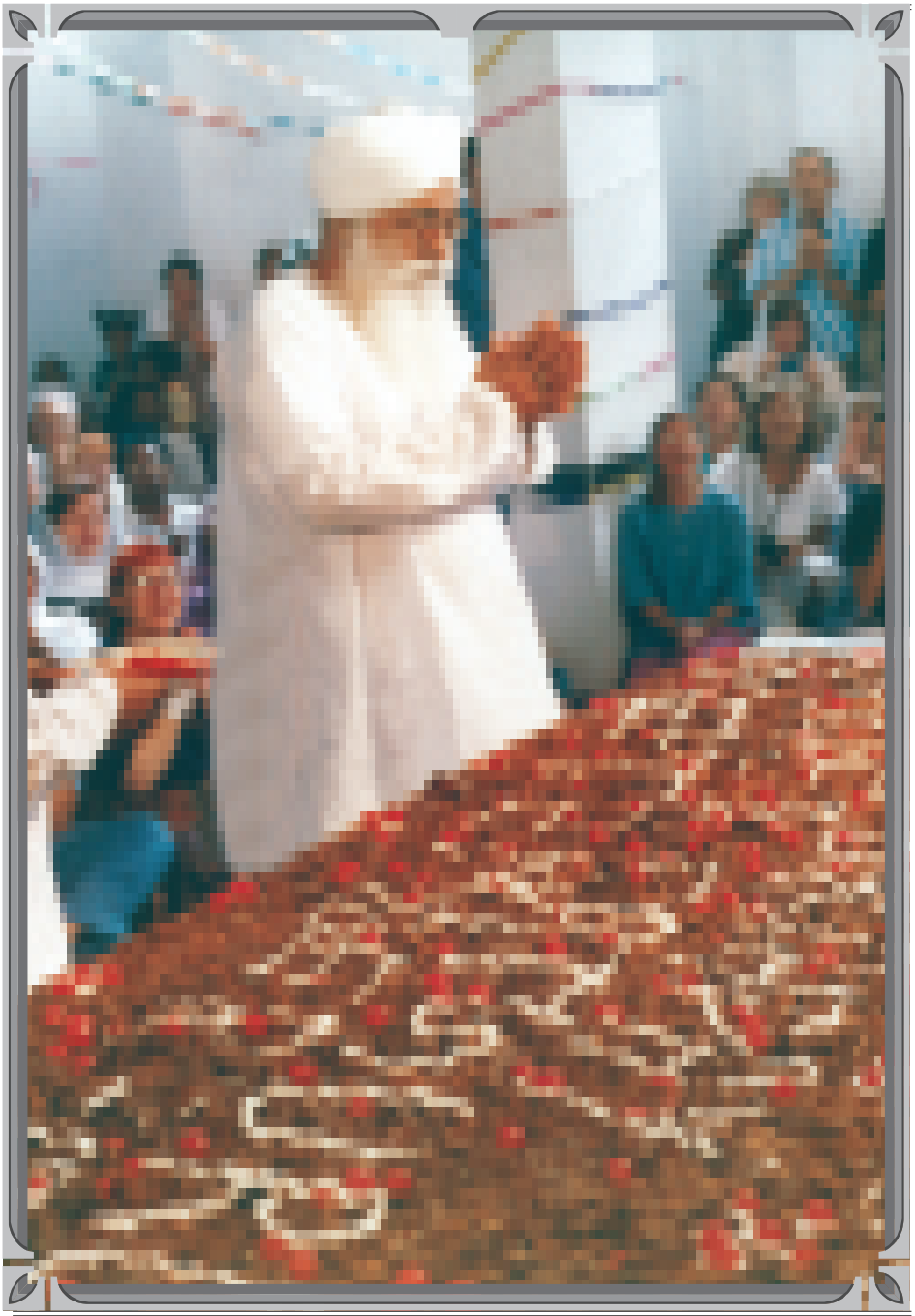

शुभ दिहाड़ा - 11 सितम्बर

जनम मरण दुहहू महि नाही जन पर उपकारी आए।
जीअ दान दे भगति लाइनि हरि सिउ लैनि मिलाए।

11 सितम्बर के शुभ अवसर पर संगत को लख–लख बधाइयाँ। हमारे लिए यह दिन बहुत सौभाग्यशाली है। आज के दिन परमपिता परमात्मा 'अजायब' देह रूप धारण करके संसार में आए और आपने हम जैसे मंदभागी जीवों पर अपार दया की वर्षा की।

आपने विश्व के चारों कोनों में 'नाम' की गंगा बहाकर अपनी दया दृष्टि से हम जीवों का कल्याण किया और प्रभु भक्ति का उपदेश दिया। सन्त संसार में परोपकार के लिए आते हैं। सन्तों का जीवन दुनियां की भलाई के लिए होता है; वे संसार में प्यार का संदेश देते हैं और सोई हुई आत्माओं को जगाने के लिए आते हैं। बुल्लेशाह कहते हैं:

मौला आदमी बन आया, ओ आया जग जगाया।

परम सन्त अजायब सिंह जी अपने एक भजन में कहते है:

बंदा बनके आया, रब बंदा बनके आया।
आ के जग जगाया, रब बंदा बनके आया।

हमारे परमपिता अजायब कहते हैं कि भक्ति एक अमोलक धन है इसे हम मोल से खरीद नहीं सकते खेतो में उगा नहीं सकते यह सच्ची इज्ज़त की दाता है इसलिए हमें सदा भक्ति करनी चाहिए। करोड़ों किताबें पढ़ने से रत्ती भर अभ्यास अच्छा है। आप पढ़े, पढ़ना अच्छा है लेकिन सोच समझकर पढ़े अगर सन्त का एक वचन भी आपके हृदय में बैठ जाए तो आपकी जिंदगी पलट सकती है।

जब गुरु 'नामदान' देता है तो सेवक के अंदर बैठ जाता है गुरु सेवक को तब तक नहीं छोड़ता जब तक उसे सतपुरुष की गोद में न

पहुँचा दे। आप जब तक आत्मा को खुराक न दे लें तब तक तन को खुराक न दें। हमारी आत्मा जन्म–जन्म से भूखी है। सदा नित नियम बनाएं। सैंकड़ो काम छोड़कर सतसंग में जाएं और हजारों काम छोड़कर अभ्यास में बैठ जाएं। आप अपने एक भजन में लिखते हैं:

सौ काम छोड़ सतसंग में जाना, हजार काम छोड़ बंदे ध्यान लगाना।
जितनी जरूरत तन को खाने की, आत्मा भी मांगे सिमरन खाना।

सन्त जागे हुए पुरुष होते हैं। सन्त सदा अपने आपको संसार में छिपाए रहते हैं; हम उन्हें कैसे पहचान सकते हैं? हमारी आँखो पर मोह माया की पट्टी बंधी है, आप अपनी पहचान देकर हमारी आंखों की पट्टी उतारते हैं तभी हम देखने के काबिल होते हैं। उनकी शान को देखकर हमारी आत्मा कह उठती है, ''*धन सतगुरु तू धन्य है।*'' उनके दिव्य रूप के चिंतन से ही हमारे मन का अंधेरा दूर हो जाता है।

सन्त अजायब सिंह जी महाराज अपने सतसंगों में कहते हैं कि सन्त चानण मनारे होते हैं। सारा संसार उनके ज्ञान रूपी प्रकाश से जगमगा उठता है; पहचानने वाले उनको पहचान लेते हैं। इत्र बेचने वाला चाहे इत्र की शीशी को कितना ही कसकर ढक्कन लगाए फिर भी खुशबू बाहर निकल ही आती है। कबीर साहब भी कहते हैं:

कहे कबीर हम धुर के भेदी, लाए हुक्म हजूरी।

इस तरह सभी महापुरुषों ने हकीकत की ओर इशारा किया है। महाराज अजायब ने भी अपने भजनों में अपनी हकीकत को बताया है:

किसे काम के थे नहीं कोई ना कौडी दे।
कृपाल सिंह सतगुरु मिलया भई अमोलक देह।
दूसर का बालक होता भक्ति बिना कंगाल।
कृपाल गुरु कृपा करी हर धन दे कियो निहाल।

सच्चा देश सच तख्त सुहाया दास अजायब कृपाल ध्याया।
सन्त दया बरस रही, बाहर मन भूला फिरे।
अंदर जोत जल रही बाहर मन भूला फिरे।

सतगुरु कृपाल ने अपने प्यारे गुरमुख अजायब से कहा, ''तुम्हारे अंदर से खुशबू आएगी और वह खुशबू सात समुन्द्र पार चली जाएगी।'' आगे चलकर यह भविष्यवाणी सच हुई। दुनियां के हर कोने से प्रेमी खिचें हुए चले आए। स्वामी जी महाराज कहते हैं:

भक्ति करे पाताल में, प्रकट होये आकाश।

आओ! हम सब मिलकर अपने सतगुरु अजायब सिंह जी महाराज के बताए मार्ग पर चलें और उनके वचनों पर अमल करें। आप कहा करते थे, ''मेरी देह से ज्यादा मेरे वचनों की इज्ज़त करें। परमात्मा आपके अंदर है जो मेहनत करेगा उसे फल अवश्य मिलेगा। मेहनती आदमी सदा कामयाब होता है। अपने जीवन को पवित्र बनाएं ताकि यह धरती आपके ऊपर मान करे कि कोई अच्छा इंसान इसके ऊपर रहता है। आपकी अच्छाई की खुशबू आपके पड़ोसी को भी आए कि ये किसी अच्छी जगह पर जाते हैं।''

आओ! आज हम इस पवित्र व शुभ अवसर पर आपके बताए मार्ग पर चलने की प्रतिज्ञा करें और सब मिलकर यह भजन गाएं:

आ सजणा चल शगन मनाईऐ।
रलके मनाइये सारे हंसिए ते गाईऐ।

जन्म दिहाड़ा अजायब सोहणे सजण दा।
भागां नाल आया दिन साडे हसण दा।
खुशियां च सारे कैहंदे जश्न मनाईऐ।

परम पिता सतगुरु अजायब सिंह जी महाराज के पवित्र शुभ जन्म दिन पर एक बार फिर लख–लख बधाइयाँ। * * *

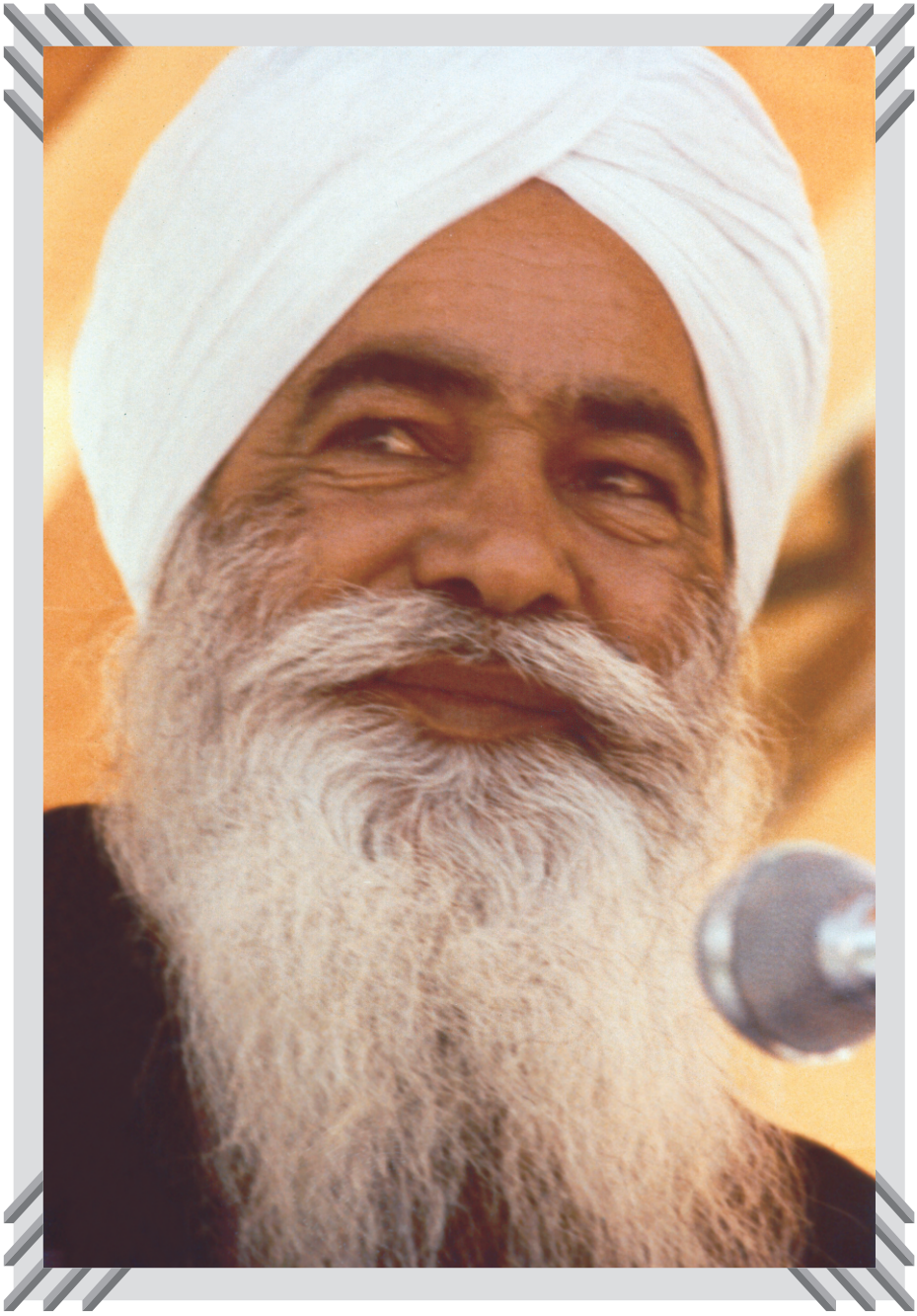

सतसंग – परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज

अमृत

गुरु नानकदेव जी की बानी

16 पी.एस.आश्रम राजस्थान

मैं अपने गुरुदेव महाराज सावन–कृपाल का धन्यवादी हूँ जो हमारे तपते दिलों की खातिर शान्ति का देश सच्चखण्ड छोड़कर इंसानी जामे में आए। यह जामा दु:खों और बीमारियों का खोल है। चाहे! हम अज्ञानता वस होकर कह दें कि हम सुखी हैं लेकिन हम नहीं जानते कि कब दुखों ने घेर लेना है।

हम महापुरुषों का सच्चा धन्यवाद अंदर जाकर ही कर सकते हैं जुबान से कह देना बहुत आसान है लेकिन अंदर जाकर सच्चाई को प्रकट करके ही हमें समझ आती है। सन्त–महात्माओं का अपना कोई कर्म नहीं होता और उनकी संसार में आने की अपनी कोई इच्छा नहीं

होती। गुरु गोविंद सिंह जी ने भी यही कहा, ''मैं दो से एक रूप हो गया। मेरा इस संसार में आने के लिए दिल नहीं चाहता था लेकिन मैं प्रभु का हुक्म टाल नहीं सका। मुझे प्रभु का जो हुक्म था मैंने संसार में आकर आत्माओं को वही संदेश दिया।'' सभी सन्त ऐसे परवाने लेकर ही संसार में आते हैं।

एक बार रात के समय महाराज कृपाल और डॉक्टर जॉनसन, बाबा सावन सिंह जी की सेवा में हाजिर थे। बातों–बातों में बाबा सावन सिंह जी ने कहा, ''हम संसार में मालिक का परवाना लेकर आते हैं और अपना स्टाफ भी साथ लेकर आते हैं। जब हमारा एक तरफ का काम पूर्ण हो जाता है तो हमें दूसरी तरफ भेज दिया जाता है।''

सन्त खुद मुक्त होते हैं और हमें भी इस संसार से मुक्ति दिलाने के लिए आते हैं। सन्त मन और इन्द्रियों के कैदी नहीं होते वे आजाद पुरुष होते हैं। जेल में डॉक्टर और सुप्रिटेन्डेंट भी जाता है लेकिन वे आजाद होते हैं; वे जब मर्जी आए जाए उनके लिए कोई मुशक्कत नहीं होती लेकिन कैदी की हालत कैदी ही जानता है।

हम चौरासी लाख योनियों में कैदियों की तरह भटक रहे हैं। कभी नीची योनियों में जाकर बैल बनकर दुख उठाते हैं, कभी इससे भी नीचे की योनियों में जाकर कष्ट उठाते हैं। अगर इंसान की योनि में भी झाँककर देखें! हम कोई सुख हासिल नहीं करते। सन्त–महात्मा हमें इस संसार से निकालने के लिए आते हैं, वे परोपकार के लिए आते हैं।

जन पर उपकारी आए जिअदान दे भगति लाइन हर सिउ लैनि मिलाए।

अगर संसार में कोई सच्चा रिश्ता है तो वह गुरु और शिष्य का रिश्ता है बाकी सारे रिश्ते गरज से बंधे हुए हैं। हम अपनी गरज से ही

एक–दूसरे के साथ प्यार करते हैं। चाहे बेटा है! चाहे माँ–बाप हैं! सबका अपना–अपना मतलब है; जब मतलब पूरा हो जाता है तो वही अपना पराया हो जाता है।

मैं एक कहानी सुनाया करता हूँ: सन्तों का एक सेवक उनके पास रहता था। वह सेवक कहता कि मैं आपका सच्चा सेवक हूँ लेकिन सन्त चुप रहते थे। कुछ समय बाद उस सेवक की शादी हो गई। सन्त किसी को शादी करवाने से मना नहीं करते; यह हमारा व्यक्तिगत मसला होता है कि हमने आजाद रहना है या परिवार बनाना है। सन्तमत में गृहस्थ या त्याग से कोई फर्क नहीं पड़ता। सवाल तो अपने दिल को साफ रखने और प्रभु के साथ जोड़ने का होता है।

जब उस सेवक की शादी हो गई तो उसने सतसंग से आना–जाना कम कर दिया। सन्त ने उससे पूछा, ''तू सतसंग का मुखिया आदमी था अब तेरी ड्यूटी कौन निभाएगा?'' सेवक ने कहा, ''मैं चाहता तो बहुत कुछ हूँ लेकिन मेरी पत्नी मेरे साथ बहुत प्यार करती है। मैं जब तक घर न जाऊँ वह खाना नहीं खाती; वह मुझे देखकर ही जीती है। सतसंग में ज्यादा समय लग जाता है अब आप ही बताएं मैं क्या करूँ?''

सन्त जी ने कहा, ''देख प्यारेया! हम तुझे दिखा देते हैं कि संसार का प्यार क्या होता है? हम तुझे एक बूटी देते हैं घर जाकर इसे पानी में घोलकर पी लेना। इसे पीने से तू बेहोश हो जाएगा लेकिन तेरी सुनने वाली शक्ति कायम रहेगी फिर तेरे घरवाले हमें बुलाएंगे क्योंकि तू हमारे पास आता है; तब तू सब कुछ खुद ही सुन लेना। सेवक ने घर जाकर वह बूटी पी ली और बेहोश हो गया। घरवालों ने कहा कि पता नहीं इसे क्या हो गया है शायद कोई छाया आ गई है?''

आमतौर पर हम लोग वहम के शिकार होते हैं। आखिर घरवालों ने विचार किया कि उस सन्त को बुलाओ जिनका यह सेवक है। सन्त जी को बुलाया गया। सन्त जी ने कहा, ''घबराने की कोई बात नहीं मैं पानी पर मंत्र पढ़ देता हूँ यह बिल्कुल ठीक हो जाएगा लेकिन जरा ध्यान देकर सुनें आप में से जो आदमी यह पानी पी लेगा वह मर जाएगा और यह जिन्दा हो जाएगा। सन्त जी ने घर के सारे सदस्यों के आगे वह पानी किया लेकिन कोई भी वह पानी पीने को तैयार नहीं हुआ।

आखिर सन्त जी ने उसकी पत्नी से कहा, ''देख बेटी! तू सदा इसे देखकर ही खाना खाती थी, यह तेरे सिर का ताज है इस समय ताज उतर रहा है तू यह पानी पी ले।'' पत्नी ने कहा, ''मेरी तो नई–नई शादी हुई है अगर मैंने पानी पिआ तो मैं मर जाऊँगी। मैं अपनी ज़िन्दगी क्यों खराब करूँ इसके ऊपर तो भाणा बीत चुका है।'' सेवक सब कुछ सुन रहा था। सन्त उसे तवज्जो देकर होश में लाए और उससे पूछने लगे, ''प्यारेया! बता है कोई तेरा?'' गुरु तेग बहादुर साहब कहते हैं:

अपने ही हित स्यों सब लागे क्या दारा क्या मीत।

चाहे माता–पिता हैं चाहे औरत–मर्द हैं सब अपने हित के कारण ही एक–दूसरे के साथ लगे हुए हैं। कोई भी किसी को अपनी ज़िंदगी का दान देने के लिए तैयार नहीं लेकिन सन्त सेवक को अपनी जिंदगी का दान, अपनी आत्मा का दान देते हैं। सन्त अपना आभार देकर पहले दिन ही हमें मन–इन्द्रियों के घाट से ऊपर लाकर उस करन–कारण प्रभु सत्ता के साथ, ज्योत और नाद के साथ जोड़ देते हैं।

हमारी देह के छह चक्र हैं। मूल चक्र का धनी गणेश, इन्द्री चक्र का धनी ब्रह्मा, नाभि चक्र का धनी विष्णु, हृदय चक्र का धनी शिव और

कंठ चक्र का धनी दुर्गा माता है। हमारी आत्मा की सीट दोनों आँखों के पीछे है। योगी लोग अपने सेवकों को मूल चक्र से अभ्यास शुरु करवाते हैं; यह बहुत लम्बा कोर्स होता है।

पिछले युगों में लोगों की उम्रें काफी ज्यादा होती थी सेहत भी अच्छी होती थी, ख्याल भी ज्यादा फैले हुए नहीं होते थे। जो लोग थोड़ा समय लगाते थे उनमें से कोई कामयाब हो जाता जो कामयाब नहीं होते थे वे उम्र के बाकी हिस्से में 'शब्द–नाम' की कमाई कर लेते लेकिन पहुँचते दोनों आँखों के दरमियान आज्ञा चक्र तक ही थे। सारी ज़िंदगी इतना कुछ करने के बाद हड्डियों का ढ़ेर हो गए। यहाँ आकर हम आरजी तौर पर विषय–विकारों पर जीत हासिल कर लेते हैं।

अगर कोई यह कहे कि मैंने बहुत पोथियाँ पढ़ ली हैं, अच्छी किताब लिख ली है, मैं विषय–विकारों से ऊपर उठ गया हूँ; मैंने अपने मन को वश में कर लिया है तो यह केवल हमारे मन का धोखा है।

आप ऋषियों–मुनियों के इतिहास पढ़ें! उन्होंने बहुत कठिन मेहनत की ऐसा नहीं कि वे बुरे आदमी थे क्योंकि बुरा आदमी इतनी मेहनत नहीं कर सकता। उनमें लगन थी लेकिन जब विषय–विकारों ने झोंका मारा तो वे बेबस हो गए मन के आगे हाथ बाँधकर खड़े हो गए। मन ने सबकी खिल्ली उड़ाई जिसकी वजह यह थी की उन्हें कोई पूरा महात्मा नहीं मिला। ऋषि–मुनि हजारों साल प्राणायाम के कष्ट सहकर मुश्किल से तीसरे तिल तक पहुँचे लेकिन सन्त पहले ही दिन अपने सेवक को 'नामदान' के समय अपनी तवज्जो, अपना आभार देकर ज्योत और नाद का अनुभव करवा देते हैं। यही पूरे सन्त की निशानी है अगर वह हमें ज्योत और नाद का अनुभव नहीं दे सकता तो वह अधूरा सन्त है।

शब्द बिना सुरत आंधली कहो कहाँ को जाए।
द्वार न जाने शब्द का फिर-फिर भटका खाए।

महाराज जी कहा करते थे, ''नामदान लेकर इंसान सतसंगी नहीं बन जाता। सतसंगी बनने के लिए हमें थोड़ी बहुत पूंजी दी जाती है ताकि हम हिम्मत करके इसे बढ़ाए। सन्त हमें अपनी जिंदगी का दान, अपनी आत्मा का आभार देकर शब्द–नाम के साथ जोड़ते हैं।''

महात्मा सदा ही हर समाज में आए और आते रहेंगे। उन्हें जिंदगी में जो भी अनुभव प्राप्त हुए जो उनके संपर्क में आए वह उन्हें भी अनुभव देते रहे और अपने ग्रन्थों में अपनी तालीम को लिख गए कि अंदर क्या–क्या रुकावटें आती है। इस रुकावट को दूर करने वाले का नाम सन्त या गुरु रख दिया।

जब समाज में अनुभवी पुरुष न रहे, दुनियां सन्तमत को भूल गई तो परमात्मा ने और सन्त भेजे जिन्होंने दुनियां में आकर अनुभव दिए और उसी तालीम को ताजा किया।

महाराज सावन सिंह जी कहा करते थे, ''मैं आपको जो समझाने के लिए आया हूँ यह कोई नई तालीम या नई साईंस नहीं हैं; यह सनातन से सनातन है।'' वर्तमान युग में लोग गुरु नानकदेव जी या दसों गुरुओं की तालीम को भूल चुके थे। पंजाब में आपने फिर से उसी तालीम को ताजा किया। आप किसी भी धर्म ग्रन्थ को पढ़कर देखें सबमें यही शिक्षा दर्ज है।

किसी ने आपसे पूछा कि आपका क्या मजहब है तो आपने कहा, ''देखो भाई! अगर परमात्मा हिन्दू है तो मैं हिन्दू हूँ अगर परमात्मा मुसलमान है तो मैं मुसलमान हूँ अगर परमात्मा सिक्ख है तो मैं सिक्ख हूँ। जो परमात्मा की जाति है वही मेरी जाति है।'' किसी ने कहा कि

महाराज जी! आप भी अपनी समाज का कोई नाम रख लें। आपने प्यार से कहा, ''और कुएँ खोदने की क्या जरूरत है पहले की बहुत कुएँ खुदे हुए हैं मसला तो पानी पीने का है। हमने रुहानियत का पानी पीना है उसे पानी कह लें या **अमृत** कह लें।''

आजकल गुरु का नाम बदनाम हो रहा है जिसका कारण अनुभवी पुरुषों की कमी है। जिसकी अपनी आँख नहीं बनी वह दूसरे की आँख क्या बनाएगा, जो खुद अन्धा है वह दूसरे को क्या अनुभव देगा? कसूर हमारी तहकीकात का है क्योंकि हम भीड़–भड़क्का देखते है।

महाराज सावन सिंह जी बताया करते थे कि किसी जगह पशुओं का बहुत बड़ा झुंड जा रहा था। किसी आदमी ने महात्मा से कहा, ''देखो जी ! कितना बड़ा झुंड जा रहा है।'' महात्मा ने उससे पूछा, ''तेरा उसमें क्या है?'' उस आदमी ने कहा, ''इस झुंड में मेरा अपना तो कुछ नहीं मेरे ताया का कट्टा है।'' यह एक छोटी सी बात है लेकिन महाराज जी के समझाने का अपना ही तरीका होता था। महात्मा अपने आस–पास कोई भीड़ इकट्ठी नहीं करते।

मैं अक्सर कहा करता हूँ कि किसी भी महात्मा के चरणों में जाने से पहले उसके बारे में जानकारी लें कि उसने कभी जिंदगी में भजन–अभ्यास किया है, कोई मेहनत की है, कमाई करके रातों को जागा है? फिर उसे सन्त या गुरु कुछ भी कह लें इससे कोई फर्क नहीं पड़ता।

महाराज जी कहा करते थे, ''मेरा आपके साथ रुहानियत का रिश्ता है। आप अपने समाज में रहकर अपने रीति–रिवाज़ करें उसमें मेरा कोई दखल नहीं।'' सन्त जब भी संसार में आते हैं हमें प्रभु के साथ जोड़ने के लिए ही आते हैं। उनकी नज़र बाहर के किसी चिह्न–

चक्र पर नहीं होती कि यह हिन्दु है या मुसलमान है। परमात्मा ने किसी पर लेबल लगाकर नहीं भेजा होता परमात्मा ने तो इंसान बनाए हैं।

सन्त हमें समझाते हैं कि सतगुरु हर जगह व्यापक है। जब वही ताकत नीचे के मण्डलों में आती है तो हम उन्हें सतगुरु कहते हैं। जब वही दिव्य देह धारण करके संसार में आते हैं तो वे अध्यापक का काम करते हैं, हमें रुहानियत का पाठ पढ़ाते हैं और हमें हौसला भी देते हैं। वे सतसंग के जरिए हमारी गलतियों को बताते हैं। हमारी हालत को देखकर आंसू भी बहाते हैं उनके अंदर कमाल की हमदर्दी होती है।

गुरु और शिष्य का रिश्ता बड़ा निर्मल और प्यार भरा है। दुनियां अपने–अपने मतलब से बंधी हुई है लेकिन गुरु और शिष्य का रिश्ता पवित्र है। गुरु शिष्य से केवल भजन–सिमरन की ही आशा रखता है। गुरु संसार में परोपकार के लिए आते हैं वे मुक्त होते हैं और संसार को भी मुक्त करने के लिए आते हैं। जो खुद मुक्त होता है वही हमें मुक्ति दिला सकता है। जो खुद मन–इन्द्रियों का गुलाम है वह हमें कैसे मुक्त कर देगा? आपके आगे गुरु नानकदेव जी का छोटा सा शब्द रखा जा रहा है जो बहुत गौर से सुनने वाला है:

जिस जल निध कारण तुम जग आए सो अमृत गुर पाही जीओ।।

गुरु नानकदेव जी महाराज कहते हैं, ''प्यारेयो! आप जिस जल, **अमृत** की खातिर इस संसार में आए हैं आपको वह **अमृत** किसी समाज से नहीं मिलेगा। आप जिस समाज में पैदा हुए हैं अगर आप उनके नियम देखें तो वे भी आपको अच्छा इंसान बनने का उपदेश देते हैं। कोई भी समाज कत्लोगारत करने की या लड़ने–झगड़ने की इज़ाज़त नहीं देता।'' गुरु अर्जुनदेव जी कहते हैं:

कर्म धर्म पाखंड जो दीसे तिस जम जुगाती लूटे।

हर समाज में प्रभु को पाने का उपदेश दिया जाता है जब हम उन समाजो में जकड़े जाते हैं सारी जिंदगी उन रीति–रिवाजों में लगे रहते हैं तो परमात्मा से दूर हो जाते हैं।

कृष्ण ने अर्जुन से कहा, ''नेक कर्म और बुरे कर्म दोनों ही जीव के बंधन का कारण बनते हैं। नेक कर्म सोने की बेड़ियाँ हैं और बुरे कर्म लोहे की बेड़ियाँ हैं। बेड़ी चाहे सोने की हो या लोहे की हो दोनों ही दुःख का कारण है।'' आप बेड़ी वाले से पूछें, ''क्या तू सुखी है?'' अच्छे कर्मों का नतीजा हम अच्छे घर में पैदा हो जाएगें, अच्छी बुद्धि होगी, ज्यादा तंदरुस्ती होगी, ज्यादा नौकर–चाकर मिल जाएंगे, हमारा बिस्तर महल में लग जाएगा लेकिन वहाँ भी परेशानियाँ और बीमारियाँ हैं। बुरे कर्मों का नतीजा हम गुलाम बनकर आ जाएंगे। झोपड़ियों में रहने लग जाएंगे, सड़कों पर झाड़ू लगाएंगे। चाहे अच्छे कर्म हों या बुरे ये हमें नहीं छुड़ा सकते। मुक्ति 'नाम' में है। 'नाम' हमें नामरूपी गुरु से मिलता है। जो अंदर जुड़ा हुआ है वही हमें जोड़ सकता है। वह **अमृत** भी हमें गुरु से ही मिलेगा। गुरु साहब कहते हैं:

अनेक योनि भरमाए बिन सतगुरु मुक्त न पाए।
फेर मुक्त पाए लग चरणी सतगुरु शब्द सुनाए।

प्यारेयो! चाहे आप कितनी भी योनियों में चले जाएं। जब तक नाम–**अमृत** प्राप्त नहीं करते आपकी मुक्ति नहीं होगी।

नानक अमृत एक है दूजा अमृत नाहि।

गुरु नानकदेव जी उस पानी को **अमृत** कहकर ब्यान कर रहे हैं। हिन्दू, मुस्लमान, सिक्ख, इसाई या पूर्व और पश्चिम के लोगों का एक ही अमृत है। जो खुशकिस्मत इस **अमृत** को पीना चाहे गुरु की कृपा से

यह अमृत पी सकता है। हमारी आँखों के नीचे इन्द्रियों के भोग हैं, विषय–विकारों की लज्जतें हैं वहाँ पर यह अमृत नहीं। जब हम स्थूल, सूक्ष्म, कारण तीनों पर्दे उतारकर पारब्रह्म में पहुँचते हैं तो हमें यह **अमृत** पीने के लिए मिलता है।

अन्तर खूंटा अमृत भरेया शब्दे काड पिए पनहारी।

वह अमृत थोड़ा सा नहीं है। वहाँ तो **अमृत** का कुआँ लगा हुआ है लेकिन 'शब्द' की कमाई करके ही हम उस अमृत को पी सकते हैं।

अमृत रस सतगुरु चुवाअया दसवें द्वार प्रकट होए आया।

दसवें द्वार पर पहुँचकर नज़र आता है कि असली गुरु का रूप सतनाम है। जब हम पारब्रह्म में पहुँचते हैं तो हमारी आत्मा को शान्ति आती है। पारब्रह्म पहुँचकर हमारी आत्मा को पता लगता है कि मैं तो ऐसे ही औरत–मर्द, जाति–पाति के झगड़ो में फँसी रही। मैं आत्मा हूँ मेरी वही जाति है जो परमात्मा की जाति है। पारब्रह्म में पहुँचकर ही गुरु पर सच्चा प्यार आता है कि सतगुरु मेरी खातिर शान्ति का देश छोड़कर इस जन्म–मरण के चोले में आया।

इतिहास बताता है कि गुरु तेग बहादुर को उस समय शरा के पाबन्द मौलानों ने कष्ट देने में कोई कमी नहीं छोड़ी ताकि इनका मन डोले लेकिन वे घबराए नहीं क्योंकि उनकी सुरत अंदर लगी हुई थी। शिष्य जानते थे कि उनके गुरुदेव क्या हैं? दूसरे लोग जो कत्ल कर रहे थे अगर उन्हें पता होता तो वे भी फायदा उठाते। सन्तों की ताकत दु:ख सह लेने में ही है; वे भाणे को मान लेते हैं। वे कभी किसी को बददुआ नहीं देते किसी का बुरा नहीं करते सबका भला ही चाहते हैं।

जब गुरु तेगबहादुर के शिष्यों को उनके सामने शहीद करने लगे तो लोग ताने–मेहणे देने लगे अगर आप अपने गुरु को परमात्मा रूप मानते हैं तो यह आपकी मदद क्यों नहीं करता? यह तो खुद पिंजरे से बाहर नहीं आ सकता। सेवकों ने जुल्म सहते हुए उफ तक नहीं की। सेवकों ने कहा, ''आप जो जुल्म कर सकते हैं करें हम अपने गुरु के नाम पर आपके जुल्मों को अंगीकार करते हैं। गुरु सेवक को इससे ज्यादा क्या ताकत दे सकता है?'' हमें तो एक काँटा भी चुभ जाए तो हम सारी रात फरियाद करते हैं।

मैं अपने गुरुदेव के समय का एक वाक्या बताया करता हूँ कि एक प्रेमी ने कहा कि महाराज जी को मेरे घर पर लेकर आना। मैंने कहा, देखेंगे! शाम के समय हम उस प्रेमी के घर चले गए उसके पैर पर चोट लगी हुई थी। उन्होंने चाय–पानी का इंतजाम भी किया हुआ था लेकिन उस प्रेमी ने कहा कि इन्हें चाय बाद में पिलाना पहले मेरे पैर पर इनकी दृष्टि डलवाओ। आप सोचकर देखें! ऐसा शिष्य गुरु को क्या समझता है? जिसके घर में चलता–फिरता छः फुट का भगवान चला जाए और वह ऐसी बातें करे, यह चोट तो कोई डाक्टर भी ठीक कर सकता है।

मैंने उसे बहुत प्यार से कहा, ''प्यारेया! तू सारे परिवार को लेकर आ जा यह चाय तो क्या दूध पिला देगा। तू चाय के दो घूँट के लिए ऐसी बातें कर रहा है; क्या यह चाय पी लेगें?'' हम लोग कितने समझदार हैं जब समय हाथ से निकल जाता है फिर पछताते हैं।

जिन्होंने **अमृत** पिया वे पारब्रह्म में पहुँच गए। गुरु हमें अमृत को पाने का साधन और तरीका बताते हैं अपना आभार देते हैं, हिम्मत देते है हमदर्दी देते हैं कि आप मेहनती बनें। जब हम नौं द्वारे खाली करके आँखों के पीछे आ जाते हैं फिर हमें पीने के लिए **अमृत** मिलता है।

इस अमृत पर किसी एक समाज का अधिकार नहीं यह अमृत सबके लिए है जो खुशकिस्मत अमृत को प्राप्त कर ले वह इसे पी सकता है। हमारा सबसे बड़ा दुश्मन मन हमारे अंदर बैठा है। बाहर के दुश्मन को तो हम हाथ–पैर जोड़ सकते हैं लेकिन इस मन ने तो ऋषि मुनियों को भी धोखा दे दिया। इंसान सोया होता है मन इसके अंदर काम की लहर पैदा करके उठा देता है; लोभ की लहर उठाता है तो देशों–प्रदेशों में भेज देता है; मन की यह हालत है।

सन्त वजीदा लिखते हैं कि शाह सिकंदर स्वप्न लेता था कि मैं सारे संसार का विजेता बनूँ और मेरे जैसा कोई न हो। उसने अपने ज्योतिषों से पूछा क्या कोई ऐसी तरकीब है जिससे मैं सारे संसार पर जीत हासिल कर सकूँ ? ज्योतिषियों ने कहा, ''अगर तुझे पीने के लिए अमृत मिल जाए तो तू सदा अमर रहेगा।'' सिकन्दर ने अमृत की हर जगह खोज की। उसने पहाड़ों, जंगलों, समुद्रों हर ऊँची–नीची जगह पर **अमृत** को खोजा। जिसे जिस वस्तु की खोज होती है उसे वह वस्तु जरूर मिलती है। उसके हाथ **अमृत** आ गया।

हमारे सतगुरु महाराज कृपाल कहा करते थे, ''भूखे को रोटी प्यासे को पानी कुदरत का असूल है जरूर मिलता है।''

काल ने सोचा! सिकन्दर की बड़ी राक्षस बुद्धि है। यह हर मुल्क पर दावा करता है। कत्लोगारत में कितनी औरतें विधवा होती है, कितने बच्चें अनाथ होते हैं। काल के राज्य में न्याय है और सन्तों का दरबार बख्शीश का होता है। न्याय में आँख का बदला आँख होता है। जो जैसा कर्म करता है उसे वैसा भुगतना पड़ता है।

बादशाह सिकन्दर हाथ में प्याला लेकर **अमृत** पीने के लिए तैयार था उसी समय काल ने एक ऐसे जन्तु का रूप धारण किया जो बड़ा ही

भयानक था। उस जन्तु के शरीर से खून और पाक बह रहा था और शरीर में सुराख भी थे। काल ने कहा बादशाह तू क्या वस्तु पीने लगा है? मेरी हालत देख! मेरे पास भी किसी ने इसकी बड़ी तारीफ की थी। मैंने इसे पिया तो मेरी यह हालत हो गई। जन्तु की हालत देखकर बादशाह के दिल में अभाव आ गया उसने प्याला हाथ से छोड़ दिया। सन्त वजीदा अपनी बानी में लिखते हैं:

शाह सिकंदर ढूँढ़े आबे हयात नू, विच पहाड़ा फिरदा दिन ते रात नू।
फेर न पीता प्याला अपने दस्तक, वजीदा कौन कहे साहिब नू इंज नहीं इंज कर।

परमात्मा ने हमें सब योनियों का सरदार बनाकर भेजा है लेकिन हम इसे शाह सिकन्दर की तरह बर्बाद करके चले जाते हैं। हम सतसंग में नहीं आते, नाम की तरफ नहीं आते अगर नाम ले लेते हैं तो कमाई नहीं करते आज कल करते–करते हम शाह सिकंदर की तरह समय को हाथ से निकाल देते हैं। गुरु नानकदेव जी कहते हैं:

अवर जोनि तेरी पनिहारी इसु धरती महि तेरी सिकदारी।

हम जिस **अमृत** की खातिर संसार में आए हैं हमें वह अमृत किसी समाज या धन–दौलत के जोर पर नहीं मिलता। आप किसी ऐसे महात्मा के पास जाएं जो खुद जुड़ा है वह आपको जोड़ देगा।

छोडो वेस भेख चतुराई दुबिधा एह फल नाहीं जीओ

आप चाहे किसी भी रंग के कपड़े पहन लें इससे आत्मा का न कुछ बिगड़ता है और न ही सँवरता है। वेश छोड़ दें, चतुराई छोड़ दें इनसे परमात्मा नहीं मिलेगा। हम दुनियां को धोखा दे लेते हैं लेकिन जो प्रभु हमारे अंदर बैठा है वह धोखा नहीं खाता। कबीर साहब कहते हैं:

राम झरोखे बैठके सबका झारा ले, जाकी जैसी चाकरी ताको तैसा दे।

उसे किसी गवाह की जरूरत नहीं। बेशक हम चतुराई करके कह दें कि कौन देखता है? वह हमारी हर हरकत को देखता है।

बिन बूझे सब कुछ जाणदा किस पे करिए अरदास।

हम किसके आगे विनती कर रहे हैं वह तो पहले से ही सब कुछ जानता है अगर कोई भूला हो तो उसे समझाए। परमात्मा अभूल है। वह जिसके अंदर प्रकट है वह भी अभूल है। वह जीवों को नाम देकर अपनी आत्माओं को भूलता नहीं।

मन रे थिर रहो मत कत जाही जीओ।।

आप कहते हैं, ''मन, तन और सुरत–निरत थिर हों तो परमात्मा हमसे दूर नहीं।'' मैं मिलट्री का वाक्या बताया करता हूँ कि जब हमें बंदूक चलाना सिखाते हैं तब सबसे पहले कहा जाता है कि बदन, बंदूक और टारगेट एक ही लाइन में हो। टारगेट के सेंटर को गुलजरी कहते हैं उसमें सफेद निशान होता है। शरीर न हिले, बंदूक न हिले फिर ट्रिगर को दबाएं आपका निशाना सही जाएगा। हमारी यह खुद की प्रेक्टिस की हुई है कि फौजी एक अँगूठे जितनी जगह पर पाँच–पाँच निशान लगा देते थे, यह एक फौजी आदमी का ही करतब होता है।

सन्त 'नामदान' के समय बताते हैं अगर हम पल–पल दुनियां की बातें सोचेंगे तो मन थिर नहीं होगा। कभी खारिश कर लेंगे कभी उठकर चल पड़ेगे तो हमारा तन थिर नहीं होगा अगर तन–मन थिर नहीं होगा तो हमारी सुरत शब्द का रस नहीं ले सकेगी। जिस तरह भजन–अभ्यास में बैठेंगे उसी तरह उठ जाएंगे और घड़ी देखकर कह देंगे कि हमने एक घंटा या दो घंटे अभ्यास में लगा दिए।

बाहर ढूंढत बहुत दुख पावेंह् घर अमृत घट माहीं जीओ।।

प्यारेयो! सब सन्तों का जाति तर्जुबा होता है। महाराज सावन सिंह जी ने बाईस साल तक खोज की। बाबा जयमल सिंह जी ने पूर्व से पश्चिम तक यात्रा की, जब स्वामी जी के पास गए तो उन्होंने घट में ही उस प्रभु परमात्मा के साथ जोड़ दिया। बेशक सन्त बने बनाए बर्तन होते हैं फिर भी दुनियां में पूर्ण होते नज़र आते हैं इसी तरह महाराज कृपाल भी खोज करते रहे कभी जंगल में शेर भी मिल जाया करता है।

मैं अपने बारे में बताया करता हूँ कि मैंने कभी मंदिर, मस्जिद और गुरुद्वारों में फर्क नहीं समझा; खुले दिल से सब सन्तों की सेवा करता रहा। मैंने कभी किसी की निन्दा नहीं की न ही निन्दा में विश्वास रखा है। मैं जिस जगह भी गया, जिसके पास जो कुछ था उसने मुझे जरूर दिया और यह भी कहा कि जिस चीज़ की तुझे तलाश है वह हम नहीं दे सकते। यह कह देना भी बहुत बड़ी बात है।

आज धुँआधार प्रचार हो रहा है कथनी है करनी नहीं अगर सचमुच करनी हो तो कोई झगड़ा ही न हो। कोई कहता है मैं सच्चा हूँ तू झूठा है बस दिन–रात यही कुछ हो रहा है। आपको जिसकी तलाश है वह आपके घट में ही है; बाहर ढूँढ़ने से कुछ नहीं मिलेगा।

अवगुण छोड गुणां कौ धावो कर अवगुण पछुताही जीओ।।

गुण ग्रहण करने की आदत डालें। किसी के ऐबों की तरफ न देखें। सन्त जहाँ भी जाते हैं गुण ग्रहण करते हैं। पल्टू साहब कहते हैं:

तुझे पराई क्या पड़ी तू अपनी भली निबेड़।

हम लोगों की तरफ देखकर अपना मन काला कर लेते हैं कि यह पापी है यह बुरा है। कबीर साहब कहते हैं:

कबीरा तेरी झोपड़ी गल कटियों के पास।
जो करेंगे सो भरेंगे तू क्यों भया उदास।

हम दुनियां के ठेकेदार बनते हैं। इनाम देना या सजा देना परमात्मा के हाथ में है। गुरु नानक साहब कहते हैं, ''प्यारेयो! हम **अमृत** को तभी पा सकेंगे जब इन चीज़ों को छोड़ देंगे। अवगुण छोड़कर पछतावा करें लेकिन हम सच्चा पछतावा अंदर जाकर ही कर सकते हैं।''

दयालु गुरु महाराज सावन सिंह जी ने एक बार अपनी बीमारी के दिनों में महाराज कृपाल से स्वामी जी का शब्द सुनाने के लिए कहा। आपने यह शब्द लिया:

गुरु मैं गुनाहगार अति भारी गुरु मैं गुनाहगार अति भारी।
काम क्रोध और छल चतुराई इन संग है मेरी यारी।

इस शब्द में शिष्य अपनी कमियों को गुरु के आगे रखता है। कुलमालिक महाराज सावन सिंह जी इस संसार में आए। आज भी लोग अगुवाही देते हैं कि आप हमारी संभाल कर रहे हैं लेकिन अपने गुरु के दरबार में आप एक गुनाहगार बनकर खड़े होते हैं। मैंने भी सदा अपने गुरु के आगे यही कहा:

तिल-तिल दा अपराधी तेरा रत्ती-रत्ती दा चोर ।
पल-पल दा मैं गुनाही भरेया बख्शी अवगुण मोर।

जो अंदर जाते हैं उनमें सच्ची नम्रता होती है। हम दुनियादारों में दिखावे की नम्रता है। महाराज सावन सिंह जी कहा करते थे कि जो लोग ऐब करके भी कहते हैं कि हमने तो कुछ किया ही नहीं वे एक और गुनाह कर रहे होते हैं। गुनाह न भी किया हो फिर भी हमें अपने गुरु के आगे यही कहना चाहिए कि हे सच्चे पातशाह! मुझे बख्श ले।

महाराज कृपाल का सत्तरह–अठारह साल का लड़का बीमार था। डॉक्टरों ने आपसे कहा कि आप दफ्तर से छुट्टी ले लें पता नहीं यह लड़का कब दम तोड़ जाए। महाराज कृपाल को सतसंग करने का हुक्म था। आपको पता लगा कि महाराज सावन सिंह जी दाँतों के इलाज के लिए लाहौर आए हुए हैं। आप सतसंग के बाद दाँतों के डॉक्टर के पास पहुँचे तो आपको पता चला कि सावन सिंह जी वहाँ से जा चुके हैं। आपके दिल में ख्याल आया कि चलो डेरे जाकर महाराज सावन सिंह जी के दर्शन कर आते हैं।

जिस समय महाराज कृपाल डेरे पहुँचे उस समय दोपहर हो चुकी थी। महाराज सावन खाना खाकर आराम कर रहे थे। दिलों की जानने वाले महाराज सावन ने आपको ऊपर बुला लिया। महाराज कृपाल ने कहा कि मैं अवज्ञा कर बैठा आपके दर्शन नहीं कर सका। महाराज सावन ने कहा कि सतसंग करना जरूरी था फिर आपने बच्चे का हाल पूछा। महाराज कृपाल ने सारी हालत बताई कि सब कुछ आपके हाथ में है, डॉक्टरों ने तो जवाब दे दिया है। महाराज सावन सिंह जी बहुत उदास हो गए। महाराज कृपाल ने पूछा, ''आप इतने उदास क्यों हो गए?'' तब आपने कहा, ''कृपाल सिंह! तूने अपने सिर का बोझ उतारकर मेरे सिर पर डाल दिया है।''

सेवक के अंदर जो कुछ भी होता है उसका गुरु को फिक्र होता है। सेवक के साथ जो बीत रही होती है गुरु को सब ज्ञान होता है लेकिन हम अपने दिलों में झाँककर देखें! कि ऐसे कितने शिष्य हैं जो यह सोचते हैं कि गुरु सब जानता है।

सर अपसर की सार न जाणेंह् फिर फिर कीच बुडाही जीओ।।

हमारे अंदर काम, क्रोध और लोभ की मैल लगी हुई है हम उसकी सफाई तीर्थों पर जाकर करते हैं।

अंतर मैल लोभ बहुत झूठे बाहर नावो काही जीओ।।
निरमल नाम जपो सद गुरमुख अंतर की गत ताही जीओ।।
परहर लोभ निंदा कूड़ त्यागो सच गुरबचनी फल पाही जीओ।।
ज्यों भावै त्यों राखो हर जीओ जन नानक शबद सलाही जीओ।।

सन्त हमें बताते हैं कि निन्दा छोड़ दें, मोह छोड़ दें और जो रास्ता हमें बताया गया है उस पर चलें। महाराज सावन सिंह जी कहा करते थे, ''निन्दा सबसे बड़ा पाप है; यह एक बेलज्जत गुनाह है। हर चीज़ खट्टी या मीठी होती है लेकिन निन्दा न तो खट्टी है और न ही मीठी है फिर भी यह इंसान का पीछा नहीं छोड़ती। हम दिन–रात दूसरों की मैल धोने में लगे हुए हैं।''

गुरु नानकदेव जी ने इस छोटे से शब्द में हमें बड़े प्यार से समझाया कि इंसान का जामा बहुत कीमती है। परमात्मा ने यह इंसानी जामा तोहफा हमें भक्ति करने के लिए दिया है। हम दूसरी योनियों में भक्ति नहीं कर सकते, परमात्मा से मिलाप नहीं कर सकते।

हम इस योनि में किसी पहुँचे हुए महात्मा के पास जाकर शब्द नाम का दान लेकर कमाई करें। अपने गुरु के आगे खड़े होकर यही कहें कि हे परमात्मा! मैं तेरी शरण में आया हूँ अब चाहे तू मुझे भूखा रख! नंगा रख! मुझे जो देगा मैं वही खाकर गुजर कर लूँगा लेकिन तू मुझे अपनी भक्ति का दान देते रहना।

हम जो कुछ दिन–रात सुनते हैं उस पर अमल करें अपनी जिंदगी को पवित्र बनाए जो मौका मिला है उससे फायदा उठाए।

* * *

सतसंग –परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज

सतगुरु ही बखशिन्द

वारां – भाई गुरदास जी

16 पी.एस.आश्रम राजस्थान

मैं सतसंग शुरु करने से पहले आपको एक कहानी सुनाऊंगा। एक पूर्ण महात्मा जंगल में रहकर भक्ति किया करते थे। आप जानते ही हैं कि पूर्ण महात्मा भक्ति के लिए एकान्त जगह ही चुनते हैं। वह महात्मा जंगल में अभ्यास करते और अपनी जरूरतें खुद ही पूरी करते थे; परमात्मा ने उस महात्मा की सेवा के लिए एक लड़का भेजा। लड़का महात्मा की सेवा और भक्ति करने लगा। महात्मा लड़के की सेवा और भक्ति से बहुत प्रभावित हुए। महात्मा ने खुश होकर उस लड़के को 'नामदान' दे दिया। लड़का भजन–अभ्यास में कामयाब हो गया।

महात्मा दूर–दूर सतसंग देने जाते थे। महात्मा जाते हुए उस लड़के को सदा बताया करते थे, ''मैं जब यहाँ पर नहीं हूँ अगर कोई मुझसे मिलने आए तो उसके साथ घुलना मिलना मत, उससे ज्यादा बातें मत करना; अपने आपको काबू में रखना।'' जब महात्मा चले जाते तो वह लड़का उस जगह की देखभाल करता था।

एक बार वहाँ एक राजा आया। राजा बहुत धनवान था उसने लड़के को कीमती चीज़े सोना और गहने दिए। लड़का राजा से बहुत प्रभावित हुआ। सतगुरु चमत्कार नहीं दिखाते वे जानते हैं कि चमत्कार करना परमात्मा का मुकाबला करना है। महात्मा अपने सेवकों को भी चमत्कार न दिखाने के लिए कहते हैं क्योंकि ऐसा करना कुदरत के कानून को अपने हाथ में लेना है।

परमात्मा जो भी करता है जिसे जो कुछ भी देता है वह उसका कारण जानता है। हम कुदरत के कानून या लोगों की तकदीर को नहीं बदल सकते। महात्मा मालिक की मौज में अपने आपको भी कुर्बान कर देते हैं; कभी चमत्कार नहीं दिखाते।

लड़के ने कोई धनवान आदमी नहीं देखा था। जब राजा ने उसे सोना दिया तो वह लड़का बहुत प्रभावित हुआ। राजा ने लड़के से कहा, ''परमात्मा ने मुझे सब कुछ दिया है बस बेटा नहीं दिया अगर आप मुझ पर दया करके बेटा होने का आर्शिवाद दें तो मैं आपका बहुत आभारी रहूंगा।'' लड़का खुशी में महात्मा की दी हुई हिदायतों को भूल गया। लड़के ने कहा, ''मैं तुम्हें आर्शिवाद देता हूँ परमात्मा तुम्हारी इच्छा पूर्ण करेंगे।'' आर्शिवाद लेकर राजा अपने महलों में चला गया।

जब महात्मा वापिस आए तो उन्होंने लड़के से पूछा, ''मेरे जाने के बाद कोई आया था?'' लड़के ने कहा, ''हाँ जी! एक बहुत धनवान आदमी आया था वह राजा लगता था। वह बेटे का आर्शिवाद चाहता था, मैंने उसे आर्शिवाद दे दिया। मैंने उससे कहा कि मेरे सतगुरु आपकी इच्छा पूर्ण करेंगे।'' महात्मा उस लड़के से बहुत नाराज़ हुए कि तुमने ऐसा क्यों किया? तुम नहीं जानते कि अगले सात जन्मों में भी उसकी किस्मत में संतान का सुख नहीं लिखा। तुमने राजा को यह आर्शिवाद देने की हिम्मत कैसे की? तुमने कुदरत के कानून के खिलाफ काम किया है। तुमने मेरी हिदायतों का पालन नहीं किया। अब तुम्हें बच्चे के रूप में उस राजा के घर जन्म लेना पड़ेगा तभी तुम्हारा प्रायश्चित होगा।

वह लड़का महात्मा के साथ रह रहा था भक्ति और भजन–अभ्यास किया करता था। वह पूर्ण अभ्यासी था उसमें थोड़ी बहुत

अंर्तयामिता भी आ गई थी। उसे अपनी गलती का अहसास हुआ। जब उसने राजा के घर बेटे के रूप में जन्म लिया तब भी उसे अंर्तयामिता थी। उसे पूर्व जन्म की गलती का अहसास था। वह उस गलती को दोहराना नहीं चाहता था इसलिए वह बचपन से ही एक भी शब्द नहीं बोला। उसे याद था कि पूर्व जन्म में वह ज्यादा बोला जिसके नतीजे में उसे यहाँ जन्म लेना पड़ा; अब वह मुक्ति चाहता था।

वह अठारह साल तक चुप रहा। राजा बहुत परेशान था। राजा जानता था कि लड़का सब कुछ सुनता है लेकिन एक शब्द भी नहीं बोलता। राजा ने उसे खुश करने की बहुत कोशिश की लेकिन कोई फायदा नहीं हुआ। इस दौरान राजा ने कई तरह के दान किए, तीर्थ यात्राएं की, मन्नतें माँगी लेकिन लड़का नहीं बोला।

राजा एक बार शिकार के लिए जंगल में जा रहा था। राजा ने उससे कहा, ''बेटे! तुम एक शब्द भी नहीं बोलते लेकिन यह भी अच्छा है कि मैं जो कुछ बोलता हूँ तुम सुन लेते हो। तुम मेरे साथ शिकार के लिए चलो मुझे अच्छा लगेगा।'' वह साथ जाने के लिए राजी हो गया।

जंगल में उन्होंने एक खरगोश देखा जब तक राजा उसे मारता वह अपने बिल में छिप गया। खरगोश का पीछा करते हुए वे वहाँ पहुँचे जहाँ खरगोश छिपा हुआ था। वहाँ उस खरगोश के अलावा और भी खरगोश थे। उस खरगोश ने अपनी भाषा में दूसरे खरगोशों से कहा, ''सब चुप हो जाओ बाहर शिकारी खड़े हैं उनके साथ जंगली कुत्ते हैं अगर तुम शोर करोगे तो वे हमारे घर को तोड़कर हमें मार डालेंगे।''

जब लड़के ने खरगोश को यह कहते सुना तो वह हँसने लगा। अब आप सोच सकते हैं कि उस समय राजा ने कैसा महसूस किया

होगा? क्योंकि उसके बेटे ने अठारह सालों तक एक शब्द भी नहीं बोला था और अब वह हँस रहा था। राजा बहुत खुश हुआ और उसने कहा, ''प्यारे बेटे! तुमने अठारह सालों में एक भी शब्द नहीं बोला। आज मैं तुम्हें हँसते देखकर बहुत खुश हूँ। क्या तुम बता सकते हो कि तुम क्यों हँसे, इस जंगल में तुम्हें किस बात ने हँसाया है?'' लड़के ने बहाना बनाकर कहा कि मैं तो ऐसे ही हँसा हूँ।

राजा जानता था कि इसमें कोई गहरा राज छिपा हुआ है। जब राजा ने बहुत जिद् की तो उस लड़के ने कहा, ''अच्छा! मैं तुम्हे सारी कहानी सुनाता हूँ। मुझे पूर्वजन्म का ज्ञान है और मैं खरगोशों की भाषा समझ सकता हूँ। मैं इसलिए हँसा क्योंकि मैंने इस खरगोश को दूसरे खरगोशों को चुप रहने के लिए कहते सुना लेकिन वह खुद चुप नहीं रहा, आपने यह सुन लिया। अब आप उन खरगोशों को ढूंढकर उन्हें मार डालेंगे। यह सब इसलिए हुआ क्योंकि वह चुप नहीं रहा।''

अब मैं आपको अपनी कहानी सुनाता हूँ कि मैं एक महात्मा के साथ जंगल में रहा करता था। आप जंगल में महात्मा से मिलने आए और मैंने आपको आर्शिवाद दे दिया। मेरे गुरु मुझसे नाराज हुए क्योंकि मैं चुप नहीं रहा। मुक्ति मिलने की बजाय मुझे आपके यहाँ जन्म लेकर कर्मों का भुगतान करना पड़ा। मैं अपने पूर्वजन्म की गलती के कारण हँसा था। मैं चुप नहीं रहा इस कारण मुझे संसार में आपके बेटे के रूप में जन्म लेना पड़ा और अब इस खरगोश ने भी वही गलती की है।

इस कहानी का मतलब यही है कि जो सब कुछ देखकर चुप रहते हैं उनके लिए सब कुछ ठीक रहता है लेकिन जो चुप नहीं रहते उनका अन्त दर्दनाक होता है।

गोरखनाथ ने गुरु नानकदेव से पूछा, ''परमात्मा के भक्त को संसार में कैसे रहना चाहिए?'' गुरु नानकदेव जी ने कहा, ''परमात्मा के भक्त को संसार में इस तरह से रहना चाहिए कि वह सब कुछ आँखों से देखे, कानों से सुने लेकिन सदा चुप रहे।''

इसी तरह मंसूर ने अपने शिष्यों से कहा, ''चुप भली होती है। चुप में सब कुछ छिपा होता है लेकिन जब चुप्पी का पर्दा हट जाता है तो आप संकट में फँस जाते हैं।'' मंसूर ने फिर कहा कि जब मैंने लोगों से कहा कि मैं और परमात्मा एक हैं तब लोगों ने मुझे बहुत कष्ट दिए अगर मैं चुप रहता है तो मुझे कष्ट न सहने पड़ते।''

दादू दयाल के एक शिष्य की कहानी भी इससे मिलती जुलती है। दादू दयाल गुरु अंगददेव के समय में हुए है। दादू दयाल पहुँचे हुए अभ्यासी थे। उन दिनों कपड़े बुनने के अच्छे साधन नहीं थे। लोग अपने घरों में धागों को बुनकर कपड़ा बनाया करते थे। साधु भी खुद के लिए धागा माँगकर उसका कपड़ा बुना करते थे। एक बार दादू दयाल ने अपने एक शिष्य को किसी गाँव में धागा माँगने के लिए भेजा।

दादू दयाल का शिष्य गाँव में धागा मांगने गया। उसने लोगों को लुभाने के लिए कहा, ''धागे दो और बेटे लो।'' औरतें उसकी और खिची आई। एक औरत का बच्चा नहीं था उसने कहा यह लो धागा। शिष्य ने कहा तुम्हारे घर बेटा होगा। जब वह शिष्य वापिस आया तो दादू दयाल उससे बहुत नाराज़ हुए। उन्होंने कहा, ''मैं तुम्हारा मुँह नहीं देखना चाहता तुमने परमात्मा की मौज के खिलाफ काम किया है। तुम्हे ऐसा नहीं करना चाहिए था। अब तुम्हें उस औरत के घर बेटे के रूप में जन्म लेना पड़ेगा क्योंकि उसकी तकदीर में कोई बेटा नहीं लिखा।''

सागर में नदियों, नहरों का पानी समा जाता है; सागर में बाढ़ नहीं आती, सागर सदा एक सा रहता है। नदियाँ, नहरें बारिश न होने पर सूख जाते हैं और ज्यादा बारिश होने पर इनमें बाढ़ आ जाती है जिससे लोगों पर विपत्ति आ जाती है। सतगुरु सागर की तरह होते हैं। सतगुरु को परमात्मा ने सब कुछ दिया होता है लेकिन वे सब कुछ अपने में छिपाए रखते हैं। शिष्य नदियों की तरह होते हैं। शिष्य दिखावा करते हैं कि उन्हें कुछ प्राप्त हुआ है; ऐसा करके वे गुरु की दया खो देते हैं। सतगुरु सदा बताते हैं कि अगर परमात्मा ने हमारे ऊपर दया की हो तो हमें धुँआ भी बाहर नहीं निकलने देना चाहिए।

महाराज सावन सिंह जी कहा करते थे, ''अगर शब्द गुरु ने आपके ऊपर दया की है या आपको अंदर कुछ दिया है तो आपको सदा अपने तक ही सीमित रखना चाहिए। आपको जरा भी नहीं दिखाना चाहिए कि सतगुरु ने मुझ पर ऐसी दया बरताई है अगर आप ऐसा करेंगे तो आपकी तरक्की रूक जाएगी। यह भी हो सकता है कि आपसे वह दया वापिस ले ली जाए।''

अगर आप पूरे गुरु का चमत्कार देखना चाहते हैं तो उस शिष्य से पूछें जो अंदर जाता है। वह बताएगा कि सतगुरु किस तरह आत्मा को परमात्मा से जोड़ता है, इन्द्रियों को मन के पंजे से आजाद करता है। हमें चौरासी लाख योनियों के जन्म–मरण के दुखों से छुड़ाकर हमारी आत्मा को सतलोक ले जाता है। गुरु शिष्य की आत्मा के साथ यह सबसे बड़ा चमत्कार करता है।

डडू बगले संख लख अक जवाहे बिसअरि काले।
सिंबल घुग्घू चकवीआं कड़छ हसति लख संढी नाले।

भाई गुरदास जी मनमुखों के सारे अवगुणों को एक जगह रखकर हमें बता रहे हैं कि मुझमें ये सभी अवगुण हैं। जो कुछ मैंने पहले कहा है वह सब कुछ मुझ पर लागू होता है।

पथर काँव रोगी घणे गदहु काले कंबल भाले।
कैहै तिल बुआड़ि लख अकतिड अरंड तुमे चितराले।
कली कनेर वखाणीऐ सभ अवगुण मैं तनि भी हाले।

आप कहते हैं, ''मेरे अंदर लाखों शंखों, बेकार झाड़ियों और कड़वे फलों वाले पेड़ों जैसे अवगुण भरे हुए हैं। मैंने कनेर के फूलों के अवगुणों का वर्णन किया है लेकिन मैं शर्मिन्दा हूँ कि वे सब अवगुण मेरे अंदर भरे हुए हैं।'' जब कोई प्रेमी अभ्यास करके अंदर जाता है तब वह देखता है कि ये सब अवगुण मेरे अंदर हैं।

साधसंगति गुर सबदु सुणि गुर उपदेसु न रिदे समाले।

सतगुरु की संगत में जाकर सतगुरु की हिदायतें सुनकर भी मैंने उन पर अमल नहीं किया।

धिगु जीवणु बेमुख बेताले।।

आप कहते हैं, ''ऐसे लोगों के जीवन पर धिक्कार है जो सतगुरु के 'शब्द' को हृदय में नहीं टिकने देते। उनका इस संसार में आना बेकार है; वे यमदूतों से सजा पाते हैं।'' सन्त–महात्मा सच्चाई बताते हुए सावधान रहते हैं क्योंकि उन्हें भय होता है कि सच्चाई बताने से उनमें अहंकार आ सकता है।

कबीर साहब कहते हैं, ''मैं अवगुणों से भरा हुआ हूँ, मुझमें कोई गुण नहीं है जो यह समझता है वही मेरा दोस्त है।''

महात्मा का हृदय पवित्र होता है वे कुलमालिक होते हैं। वे परमात्मा होते हुए भी घमंड नहीं करते। वे हमें दीनता सिखाना चाहते हैं, हमें अपने जैसा बनाना चाहते हैं।

एक बार मैं माता मिली से मिलने गया। उसने कहा क्या आप जानते हैं कि मेरा प्यारा सतगुरु मुझे इस मार्ग पर कैसे लाया? मैंने कहा, ''जब आप मुझे बताएंगी तभी मुझे पता चलेगा।'' माता मिली ने बताया कि मुझे अपनी दौलत का बहुत घमंड था। महाराज कृपाल मेरे सामने बिल्कुल दीन बनकर खड़े हो गए। महाराज जी ने कहा, ''मैं तुम्हें ऊँचे स्थान पर खड़ा कर देता हूँ और मैं यहाँ निचले स्थान पर खड़ा हो जाता हूँ जो लोग यहाँ आएंगे वे मेरे गुणों को नमस्कार करेंगे और तुम्हारी तरफ ध्यान ही नहीं देंगे क्योंकि लोग सदा अच्छे गुणों और नम्रता को ही नमस्कार करते हैं।'' इस तरह प्यारे सतगुरु ने माता मिली का दिल जीत लिया और वह सन्तमत में आई। यह तो केवल उदाहरण मात्र है कि हमारे सतगुरु कितनी दीनता रखते थे।

महाराज कृपाल दीनता के नमूने थे। शिष्य को गुरु का यशगान करना अच्छा लगता है। यह तभी होता है जब शिष्य गुरु को समझ जाता है। तुलसी साहब कहते हैं:

जे कोई कहै सन्त को चीन्हा, तुलसी हाथ कान पै दीन्हा।

सतगुरु को कोई नहीं समझ सकता। आप भजन गाते हैं ज्यादातर भजनों में महाराज कृपाल को शाह कृपाल लिखा गया है कि तुम शाह कृपाल हो, तुम्हारा भक्त गरीब है। मैं गरीबी धारण करके ही यह विनती कर रहा हूँ। यह सतगुरु की दया है कि उसने अपने शिष्य पर इतनी दीनता की बख्शीश की। आप यह भजन भी गाते हैं:

मेरा कागज गुनाह वाला पाड़ दे।

मैं पापी हूँ आप बख्शिंद हैं। आपने दूसरे भजन में पढ़ा है:

तेरे ते गुरु जी मेरा राई रत्ती जोर ना।

आप यह भजन भी गाते हैं:

तेरे जेहा मैंनू इक वी ना मिलणा, मेरे जेहियां तैनूं लक्खी प्यारेया।

किसे काम का थे नहीं कोई न कौडी दे।
कृपाल सिंह सतगुरु मिलया भई अमोलक देह।

भक्त नामदेव ने भी ऐसी ही दीनता दिखाई है। आप कहते हैं, ''*गोविंद गोविंद गा ले*। परमात्मा की भक्ति करते करते एक रंगरेज अमोलक बन गया।''

लख निंदक लख बेमुखाँ दूत दुसट लख लूण हरामी।
स्वामि धोही अकिरतघणी चोर जार लख लख पहिनामी।

आप कहते हैं, ''मेरे अंदर लाखों कृतघ्न, निंदकों, झूठो और विश्वास घातकों के अवगुण भरे हुए हैं।''

बाम्हण गाईं वंस घात लाइतबार हजार असामी।

मेरे अंदर लाखों चुगलखोरों, साधुओं वे गुरुओं के हत्यारों के अवगुण भरे हुए हैं।

कूड़िआर गुरु गोप लख गुनहगार लख लख बदनामी।

भाई गुरदास कहते हैं, ''मेरे अंदर अपने वंश का घात करने वाले लाखों लोगों के अवगुण भरे हुए हैं। मेरे अंदर लाखों धोखेबाज लोगों के अवगुण हैं। मैंने पहले जिन अवगुणों का जिक्र किया है वे सब अवगुण मेरे अंदर हैं। मेरे अंदर उन लाखों लोगों के अवगुण भरे हुए

हैं जो कि अपने गुरुओं को गालियां देते हैं और अपने गुरु के यश को छिपाते हैं। मुझमें झूठे और निन्दक के सभी के अवगुण भरे हुए हैं।''

अपराधी बहु पतित लख अवगुणिआर खुआर खुनामी।

आप कहते हैं मेरे अंदर लाखों अपराधियों के अवगुण भरे हुए हैं।

लख निबासी दगाबाज लख सैतान सलामि सलामी।

मेरे अंदर उन लाखों लोगों के अवगुण भरे हैं जो दूसरों का वेश धारण करके लोगों को धोखा देते हैं। मेरे अंदर उन लोगों के भी अवगुण हैं जो दूसरों को झूठा मान देकर खुद दूसरों से मान प्राप्त करना चाहते हैं।

तूँ वेखहि हउ मुकरा हउ कपटी तूं अंतरिजामी।
पतित उधारणु बिरदु सुआमी।।

आप सब कुछ जानते हैं, सब कुछ देख रहे हैं। आप मेरे पूर्वजन्मों के बारे में भी जानते हैं और इस जन्म को भी देख रहे हैं। मैं आपके दर पर आ गया हूँ आपका शिष्य कहलाता हूँ इसलिए अब आपका ही काम है आप मेरे मान की रक्षा करें।

भाई गुरदास जी के कहने का अर्थ यह है कि चाहे हमारे अंदर कितने ही अवगुण हैं अगर हम गुरु पर पूरा भरोसा रखें हम उनके आगे अपने पापों को स्वीकार करें तो गुरु हमें तार देगा।

महाराज सावन सिंह जी कहा करते थे, ''अगर हम गलती करके गलती स्वीकार नहीं करते तो हम एक गलती और कर रहे होते हैं।'' गुरु अर्जुनदेव जी महाराज कहते हैं:

ऊच अपार बेअंत सुआमी कउण जाणे गुण तेरे।
गावत उधरहि सुणते उधरहि विनसहि पाप घनेरे।

भाई गुरुदास जी कहते हैं कि मेरे प्यारे सतगुरु ने भूतों राक्षसों को भी मुक्त किया है अगर इंसान उनकी शरण में आएगा तो वह उसको मुक्त क्यों नहीं करेंगे? **सतगुरु ही बख्शिंद हैं** लेकिन हमने यह देखना है कि हमारे अंदर कितनी दीनता है; हम परमात्मा से कितना प्यार करते हैं? क्या हमने अपने आपको क्षमा के काबिल बनाया है?

कबीर साहब कहते हैं, ''पूरे गुरु के लिए दूरी से कोई फर्क नहीं पड़ता है। चाहे आप कहीं भी बैठे हैं अपने अंदर ही सतगुरु से विनती करें, क्षमा मांगे। वह अवश्य सुनता है क्योंकि गुरु का शब्द रूप सदा शिष्य के साथ रहता है। जिस तरह छाया मनुष्य को कभी नहीं छोड़ती है इसी तरह शब्द रूप गुरु भी शिष्य को कभी नहीं छोड़ता।''

भाई गुरदास कहते हैं, ''हे मालिक! आप देख रहे हैं कि मैं गलती करके भी इंकार कर रहा हूँ। मैं सदा सच्चा–सुच्चा बनने का बहाना करता हूँ। आप सब कुछ जानते हैं आपने ही मेरी इज्जत रखनी है।''

प्यारेयो! यह सच्चाई है जब मेरे प्यारे सतगुरु ने यहाँ छोटी सी गुफा बनाकर अभ्यास करने के लिए कहा। उस समय आपने मेरी आँखों पर हाथ रखकर कहा, ''मुझे ये आखें बाहर से बंद करके अंदर खोलनी हैं।''

उस समय मेरे अंदर संसार की याद या संसार की चीजों का महत्त्व नहीं था फिर भी मेरी आँखों से आँसू बह निकले। मैंने रोते हुए अपने सतगुरु से कहा, ''हे सतगुरु! मेरी इज्जत आपके हाथ में है। आपने मेरी रक्षा करनी है।'' प्यारे सतगुरु ने मुझे गले से लगाया और कहा, ''मेरे प्यारे बेटे! कोई नई बात नहीं होगी, तुम्हें आँखें अंदर खोलनी है।''

* * *

परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज द्वारा प्रेमियों के सवालों के जवाब

मन की सूक्ष्म चालाकियां

16 पी.एस.आश्रम राजस्थान

एक प्रेमी: *महाराज जी! मैं यह जानना चाहता हूँ कि मुझे क्या करना चाहिए और क्या नहीं करना चाहिए जिससे मेरे भजन–अभ्यास का नुकसान न हो। भजन–अभ्यास को बनाए रखने के लिए मुझे थोड़ा समय और बढ़ाना चाहिए या मैं जितना समय लगा रहा हूँ उसमें एक घंटा अधिक देना चाहिए। मेरे मित्र और घर पर अन्य सतसंगी भी हैं जो इस यात्रा के बारे में जानना चाहेंगे। क्या इस यात्रा के बारे में उन्हें बताने से मेरे भजन अभ्यास का नुकसान होगा?*

बाबा जी: आप अपने देश या घर पर जितना भजन–अभ्यास करेंगे वह आपकी रूहानी तरक्की के लिए लाभदायक होगा। भजन अभ्यास के साथ–साथ अपने जीवन को साफ–सुथरा और पवित्र बनाना भी जरूरी है, आप सदा अपने विचारों को शुद्ध रखें।

जहाँ तक अनुभव बताने का सम्बन्ध है अगर कोई इस बारे में रूचि रखता है, ग्रहण शक्ति वाला है और वह यह जानना चाहता है कि आपने इस यात्रा से क्या प्राप्त किया है तो आपको उसे अपनी इस पवित्र यात्रा का अनुभव बताना चाहिए। आपको अपना अनुभव किसी पर थोपना नहीं चाहिए। आपकी यह यात्रा मामूली नहीं है।

आप इस पवित्र यात्रा के महत्व को समझें कि सतगुरु ने बहुत दया करके आपको इस यात्रा का अवसर दिया है। आपने यहाँ रहकर बहुत भजन–अभ्यास किया है और काफी रूहानियत प्राप्त की है।

एक प्रेमी : *अब आप रात को सतसंग नहीं देते केवल शब्द ही गाए जाते हैं क्या हम इस समय भजन कर सकते हैं?*

बाबा जी : मैंने पिछले ग्रुप में रात को सतसंग देने शुरू किए थे। उस समय यहाँ के बहुत से प्रेमियों ने शिकायत की क्योंकि वे मेरे लिए भजन गाना चाहते हैं। जब मैंने गुफा से बाहर न आने का फैसला किया तो इस इलाके के प्रेमियों की विनती पर मैंने इन्हें रात को आठ बजे से नौं बजे तक का समय देना शुरू किया। महाराज कृपाल की आज्ञा से मैं इस एक घंटे में इन लोगों से मिलता। इस समय ये प्रेमी भजन गाते हैं तो इनकी आत्मा को मस्ती आती है जिससे ये खुशी अनुभव करते हैं। यह एक घंटा सिर्फ आपके लिए नहीं है यह समय उस हर आदमी के लिए है जो आश्रम में आता है।

आप लोगों ने देखा होगा कि इस एक घण्टे का आनन्द लेने के लिए दूसरे प्रेमी भी आते हैं। आप इस पर विचार करेंगे और इस एक घण्टे से फायदा उठाएंगे। जब प्रेमी शब्द भजन गा रहे होते है तो वे दया प्राप्त कर रहे होते हैं अगर आप अपनी ग्रहणशक्ति बनाएंगे तो आपको भी वही अनुभव होगा।

एक प्रेमी : *जब कोई शिष्य सन्त जी के लिए भजन गाता है तो क्या सन्त जी उस शिष्य को अधिक दया देते है?*

बाबा जी : आप जानते हैं कि जो बच्चा कक्षा में अच्छी तरह पढ़ता है अध्यापक का ज्यादा ध्यान उस बच्चे की ओर होता है। आप जिस गुरु के लिए शब्द गाते हैं उसे भी कुछ देना पड़ता है। वह आपकी आत्मा को आभार देता है चाहे आप उसे महसूस नहीं करते वह फिर भी आपको रूहानियत दे रहा होता है। मैंने एक भजन में लिखा है:

काल ने जाल विछाया डाडा, बच के ना कोई जावे।
सच्चा गुरु जिन्हां नूं मिलया, ऐत्थें आन छुड़ावे।

आप काल के जाल से मुक्त हो जाएंगे तभी गुरु के भजन गा पाएंगे। हम जब भजन गाते हैं तो हमारी जुबान भी पवित्र हो जाती है भजनों को केवल रस्म रिवाज न समझें। जब कुछ लोग मिलकर एक साथ भजन गाते हैं उस समय गुरु की दया का अमृत बह रहा होता है। जो उस अमृत को चखते हैं उनके अंदर शान्ति आ जाती है और मन का जहर चला जाता है। गुरु नानक साहब भजन गाने वाली मंडली को भक्तों की पावन मंडली कहा करते थे।

एक प्रेमी : *जब कोई सन्त अपने शिष्यों के लिए भजन गाता है तो उसमें क्या भेद छुपा होता है? क्या आप भी हमारे लिए भजन गाएंगे?*

बाबा जी : मैंने कई बार भजन गाए हैं। मैंने महाराज कृपाल के सामने बहुत से भजन गाए हैं। मैं जब भजन गाता था तब आप बहुत ध्यान से सुनते थे। बहुत बार जब आप खुशी महसूस करते उस समय भजन की हर एक तुक पर मेरी ओर इशारा करते हुए कहते, ''हाँ! यह ठीक है।'' मैं जब अपने प्यारे सतगुरु के लिए भजन गाता था वह समय मेरे लिए बहुत कीमती और सुन्दर था। मैं उस समय जो दया प्राप्त करता था वह ब्यान नहीं की जा सकती। सन्त के लिए किए गए हर काम से हमें उनकी दया मिलती है लेकिन उस दया को हम अपनी ग्रहणशक्ति के अनुसार ही प्राप्त करते हैं।

महाराज जी कहा करते थे, ''शेरनी का दूध रखने के लिए सोने का बर्तन चाहिए अगर आपके पास सोने का बर्तन नहीं तो शेरनी का दूध खराब हो जाएगा।''

रोजाना का भजन–सिमरन आत्मा की सफाई का काम करता है। सिमरन हमारे बर्तन को तैयार करता है और सतगुरु की दया के लिए ग्रहणशक्ति पैदा करता है। दु:ख की बात है कि हम कभी काम, कभी क्रोध, कभी लोभ और मोह के वेग में बहकर अपनी आत्मा को गन्दा भी करते जा रहे हैं; जिससे हम अपनी ग्रहणशक्ति को बढ़ा नहीं सकते हालांकि हम इसके लिए कोशिश करते हैं।

आप जानते हैं कि साफ कपड़े को रंगना बहुत आसान है अगर कपड़ा गन्दा है तो हमें पहले इस कपड़े को साफ करना पड़ेगा तभी हम इसे रंग सकते हैं। कपड़े से गंदगी हटाने में बहुत समय लगता है।

मेरा जाती तर्जुबा है और मैने यह बहुत बार कहा है कि किसी प्यारी आत्मा का गुरु के पास आना इस तरह है जैसे बारूद को आग के पास लाया जाए। सूखे बारूद को जैसे ही आग के पास लाते हैं तो उसमें विस्फोट हो जाता है। हमारी क्या हालत है? हम गीले बारूद हैं। गीले बारूद की नमी को दूर करने के लिए गर्मी की जरूरत होती है। धीरे–धीरे यह भी सूख जाता है जब यह आग के पास लाया जाता है तो यह जलने लग जाता है।

इसी तरह हमारी आत्मा पर कई पर्दे हैं। हमारी आत्मा काम, क्रोध, लोभ, मोह और अहंकार से गन्दी हो चुकी है। धीरे–धीरे सिमरन व भजन–अभ्यास द्वारा आत्मा के ऊपर के गन्दे खोल उतर जाते हैं हमारी आत्मा शब्द के साथ जुड़ जाती है वह शब्द हमारे अंदर है। अपने जीवन को पवित्र बनाऐं आप पर नाम का रंग चढ़ जाएगा।

हम अपनी आत्मा की पवित्रता के लिए दवाई ले रहे हैं लेकिन पाँच डाकुओं से छुटकारा नहीं पा रहे तभी हमारी तरक्की नहीं हो रही।

प्यारयो! आपने अपनी सारी ज़िन्दगी इन पाँचों रसों को भोगने में लगा दी लेकिन आप अभी भी संतुष्ट नहीं हुए। एक दिन ऐसा आएगा ये भोग आपको भोग लेंगे। हम आग पर लकड़ी डालते जाएंगे तो आग और ज्यादा भड़केगी इसी तरह हम मन की इच्छाओं को पूरा करते रहेंगे तो इच्छाएं और भड़केंगी। मन जिन चीजों को मांगता है अगर हम उसे वे चीज़ें देते रहेंगे तो मन और ज्यादा चीज़ों की मांग करेगा और यह चक्कर कभी भी समाप्त नहीं होगा।

एक प्रेमी : *हम आत्मा रूपी कपड़े को साफ करते हुए निराश भी हो सकते हैं जोकि सतगुरु और शिष्य के बीच बाधा बन सकता है। रचनात्मक अवगुण की एक हल्की लकीर हो तो भी हमें बड़ी मेहनत करनी पड़ती है। विनाशकारी दोष किस तरह तकलीफ देता है?*

बाबा जी : आप जो कुछ भी करते हैं आपको पहले सोचना चाहिए क्या यह अच्छा कर्म है या बुरा कर्म है? आप लोग कुछ करने से पहले नहीं सोचते, जब गलती करते हैं तो अपने आपको दोषी महसूस करते हैं। जब हम अपने आपको दोषी महसूस करते हैं तो यह हमारे और गुरु के बीच बाधा बन जाती है।

कुएं में कूदने के बाद पछतावा करने का क्या फायदा? हमें कुएं में कूदने से पहले सोचना चाहिए कि कुएं में कूदने से हमारी टांग टूट सकती है या हम मर सकते हैं लेकिन हम लोग बिना सोचे समझे सब कुछ करते रहते हैं।

यह मन की आदत है कि पहले मन आपसे कहेगा यह काम कर ले इसमें कोई हर्ज नहीं हैं बाद में मन कहेगा कि यह हमारी गलती है तब आप अपने आपको दोषी समझेंगे।

कबीर साहब कहते हैं, ''इंसान मन का कहना मानकर जंगल में जाकर परमात्मा की भक्ति करता है। जब जंगल में चला जाता है तो मन इसे वापिस बस्ती में लौटने को कहता है। मन का कहना मानकर ही इंसान चौरासी लाख योनियों में जन्मता और मरता है।''

परमात्मा की भक्ति करने के लिए आपको मजबूत होना चाहिए। मन बहुत से बहाने बनाकर आपको जंगल से वापिस घर ले आता है। जब हम घर आकर सांसारिक लोंगो से सम्पर्क करते हैं तो वे हमें शादी करने के लिए कहते हैं। जब हमारी शादी हो जाती है तो आप जानते हैं कि गृहस्थ जीवन बिताना कितना कठिन होता है फिर बाल बच्चे होते हैं और परिवार की देखभाल करने के लिए बहुत कुछ करना पड़ता है। फिर यह भजन–सिमरन करना भी छोड़ देता है क्योंकि इसने मन का कहना माना था। इस तरह परमात्मा की भक्ति नहीं कर सकते और चौरासी लाख के जन्म–मरण में चले जाते हैं।

कबीर साहब कहते हैं, ''मन ऐसा है जो पहले हमें त्यागी बनने के लिए कहता है फिर यही मन हमें गृहस्थी से भी बदतर बना देता है।'' मेरा एक चचेरा भाई है। वह मेरी भक्ति से बहुत प्रभावित था और मेरे साथ भक्ति करना चाहता था। जब हम छोटे लड़के थे हम दोनों ने कसम ली थी कि हम शादी नहीं करवाएगें, परमात्मा की भक्ति करेंगे। वह कुछ समय मेरे साथ बिताकर घर चला गया।

जब वह शादी करने वाला था मैं उस समय पटियाला की फौज में नौकरी कर रहा था। मेरे चाचा जी ने मुझे शादी में नहीं बुलाया क्योंकि वह जानते थे अगर मैं वहाँ आया तो मैं उसे अपना वायदा याद करवाऊंगा और वह शादी करने से इंकार कर देगा। किसी तरह मुझे पता चला कि वह शादी करने जा रहा है, मैं बिना निमन्त्रण के ही वहाँ चला गया।

मैं वहाँ जाकर चुप रहा और एक जगह बैठ गया। मेरे चाचा जी ने मेरा स्वागत नहीं किया। उन्होंने नाराज होकर कहा, ''तुम यहाँ क्यों आए हो यहाँ से चले जाओ?'' मैं घबराया नहीं और बिना कुछ बोले वहाँ बैठा रहा। जब वह लड़का घोड़ी पर चढ़ने लगा तो मैने उससे पूछा, ''हमने जो कसम उठाई थी उसका क्या हुआ?'' यह कहकर मैं वहाँ से चल पड़ा क्योंकि मैं किसी आफत में नहीं पड़ना चाहता था।

वह एक अच्छी आत्मा थी। उसे अहसास हुआ कि वह क्या करने जा रहा है और वह भी वहाँ से चल पड़ा। मैं एक दिशा में गया और वह दूसरी दिशा में गया; हम दोनों रेलवे स्टेशन पहुँच गए। घर के लोग दूल्हे को तलाश करने लगे क्योंकि उन्हें बारात लेकर दुल्हन के घर जाना था। मैं वहाँ से गायब हो गया था इसलिए मेरे चाचा जी ने सोचा कि मैं उस लड़के को ले गया हूँगा! उन्होंने पास के रेलवे स्टेशनों पर आदमी भेज दिए। वे आदमी हमें पकड़कर वापिस ले गए।

उस समय मुझे भी तकलीफ भोगनी पड़ी क्योंकि उस समय मैं दुबला–पतला था। रेलवे स्टेशन पर दूसरे लोगों ने उन मजबूत लोगों को मेरा पीछा करते हुए देखा। मैंने उन लोगों को बताया कि मैं फौज की नौकरी में वापिस जा रहा हूँ। मैं इन लोगों को नहीं जानता ये मुझे परेशान कर रहे हैं। वे मुझे वापिस चाचा जी के घर ले गए उसके बाद मेरे चचेरे भाई की शादी हो गई।

उसकी शादी से पहले जब वह मेरे साथ भक्ति कर रहा था। एक दिन उसने लोगों से कहा, ''अब संसार का अंत होने वाला है।'' लोग उसकी बड़ी इज्जत करते थे उन्होने पूछा, ''क्या इस संसार के अन्त से बचने का कोई उपाय है?'' उसके पास कोई उत्तर नहीं था क्योंकि अभी हमें परमात्मा का पूरा ज्ञान नहीं था।

मैं वहाँ गया और मैंने उन लोगों से कहा कि इस संसार के अन्त का कोई हल नहीं। यह वापिस अपने गाँव आ रहा है क्योंकि इसके मन ने इसे अपने परिवार में रहने के लिए कहा है। अब इसकी शादी हो गई है यह एक गृहस्थी की तरह सारे काम करेगा। उस समय उसने मेरा विश्वास नहीं किया मैं वहाँ से चला आया। उसकी शादी हो गई अब उसकी नौ बेटियाँ हैं।

अब वह अन्धा हो गया है। उसे आठ बेटियों का पालन–पोषण करना पड़ता है क्योंकि एक बेटी शादी होने के बाद चल बसी। अब वह बूढ़ा और अंधा है; उसे सारे बच्चों की देखभाल करनी पड़ती है।

कुछ महीने पहले जब मैं दिल्ली जा रहा था मैं उसे रायसिहंनगर में मिला। अंधा होने के कारण वह मुझे देख नहीं सका लेकिन मैंने उसे देखा और पहचान लिया। मैंने उससे पूछा, ''तुम्हारा क्या हाल है?''

उसने कहा, ''मैं शादी करके पछता रहा हूँ।'' मैंने उससे कहा कि अब पछताने का क्या फायदा? तुम्हें उस समय सोचना चाहिए था जब मैंने तुम्हें कसम याद दिलाई थी।

पहले हमारा मन कहेगा कि हमें सन्त बनना चाहिए, परमात्मा का भक्त बनना चाहिए और थोड़े समय के लिए मन परमात्मा की भक्ति में लगाएगा। अचानक मन हमारे साथ ऐसी चालाकी करेगा कि हमें पता भी नहीं चलेगा घर वापिस ले आएगा। धीरे–धीरे आप सांसारिक चीज़ों में डूब जाएंगे और आखिर में आपको पछताना पड़ेगा। ये **मन की सूक्ष्म चालाकियां** हैं। हमें सावधान होने की जरूरत है। कौन जानता है कि यह मन कब हमारे साथ चालाकी करेगा? मैंने एक भजन में कहा है:

मन जदों हठीला होवे तां बदियां वल्लों मोड़ लयो।
जे अजे बाज नां आवे, तां गुरु चरणां विच जोड़ दयो।

* * *

दुनियां के किसी पदार्थ में सुख नहीं अगर इन पदार्थों में सुख होता तो हमसे पहले ही लोग इन सुखों की बिल्टियां बनवाकर ले जाते। बच्चों में सुख होता तो हमारे हिस्से में न आता। धन दौलत जायदादों में सुख होता तो हमसे पहले हमारे बुर्जुग इसे ले जाते हमारे हिस्से में न आता। जब वे यहाँ सुख नहीं ढूंढ सके रोते चले गए तो हम क्या आस लगाए बैठे हैं?

परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज

आऐ जी तेरे, दर ते भिखारी खैर[1] पावो, *(2)*

1. *तेरा दरबार सच्चा, होवे दीदार सच्चा,*
मिलदा है प्यार सच्चा, बेड़ा है पार सच्चा, *(2)*
आवो, बणके उपकारी खैर पावो,
आऐ जी तेरे .....

2. *तेरी है शान निराली, दु:खियां दा तूं हैं वाली,*
रूहां दे बाग दा माली, कट देवो आ यम जाली, *(2)*
तेरी, महिमा निराली खैर पावो,
आऐ जी तेरे .....

3. *होमैं दा रोग हटावो, नूरी जो झलक दिखावो,*
सच्चा जो शब्द सुनावो, नाम दी खैर पावो, *(2)*
देवो, झलक न्यारी खैर पावो,
आऐ जी तेरे .....

4. *दुनियां दा देख पसारा, चलदा ना कोई चारा,*
'अजायब' सी कौण विचारा, दित्ता कृपाल सहारा, *(2)*
साडी, कट दो बीमारी खैर पावो,
आऐ जी तेरे .....

धन्य अजायब

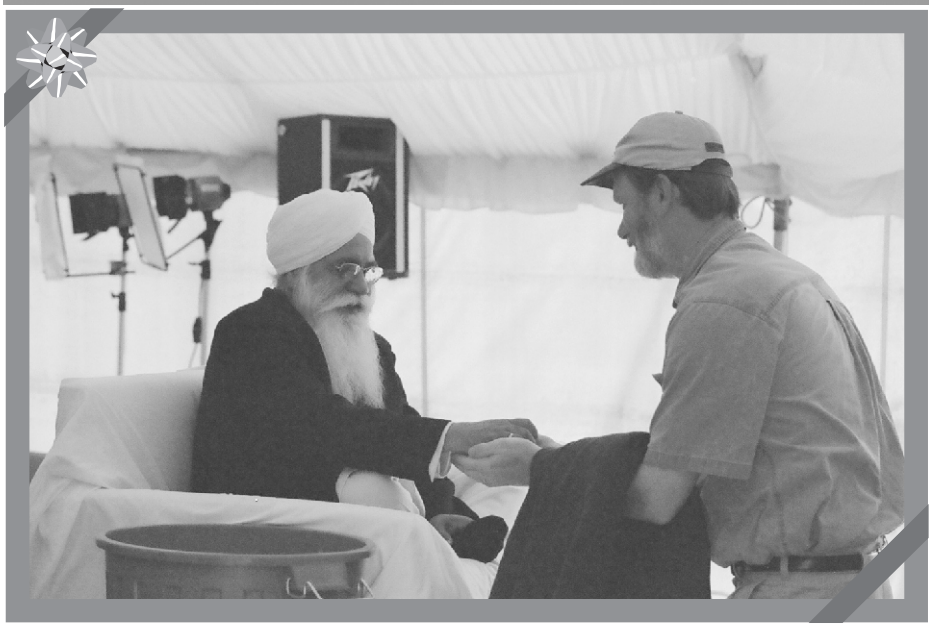

16 पी.एस.आश्रम में अगले सतसंगों के कार्यक्रम

28, 29, 30 अक्टूबर 2011

25, 26, 27 नवम्बर 2011

23, 24, 25 दिसम्बर 2011

सन्तबानी आश्रम
गांव व डाकखाना - 16 पी.एस.
वाया - मुकलावा
तहसील - रायसिंह नगर - 335 039
जिला - श्री गंगानगर (राजस्थान)